Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

हिंदी के वैश्विक प्रसार में आर्य समाज का योगदान

Bajinder Singh*

Assistant Professor, Department of Hindi, Rajiv Gandhi Mahavidayala, Uchana, Jind

सार - *"सन् 1875 ई0 में स्वामी दयानंद सरस्वती (1824-83ई0) की प्ररेणा से महत्त्वपूर्ण सामाजिक संस्था आर्य समाज की स्थापना हुई, जिसके द्वारा धर्म, समाज, शिक्षा एवं सहित्य के क्षेत्र में क्रान्ति हुई। आर्य समाज के नेताओं ने धर्म और समाज के क्षेत्र में प्रचलित रूढ़ियों, अंधविश्वासों-पाखण्डों आदि का खण्डन करके हिंदी भाषा के माध्यम से धर्म एवं सदाचार के शुद्ध रूप को प्रकाशित किया।"1 इससे भारतीय समाज में जागृति की एक नई लहर और बौद्धिक चेतना की एक नयी उद्दीप्ति फैली, जिसका प्रभाव साहित्य और भाषा पर भी पड़ना पूर्ण रूप् से स्वाभाविक था। "जैसा कि आधुनिक काल को गद्यकाल कहा जाता है और इससे (गद्य) बौद्धिक चेतना से इसका सीधा सम्बन्ध है।2 जब भी किसी व्यक्ति या समाज के द्वारा विचार-विमर्श, तर्क, वितर्क एवं चिन्तन-मनन के बौद्धिक प्रयास होते है तो उस स्थिति में उसकी अभिव्यक्ति के लिए भाषा के गद्य रूप् की आवश्यकता पर आश्रित आन्दोलन नहीं था, वह बौद्धिकता पर आधारित था, अतः उसके नेताओं के द्वारा अत्यन्त सशक्त गदय का प्रयोग किया गया स्वामी दयानंद स्वयं गुजराती थे और संस्कृत के उद्भट विद्वान थे। इसे वावजूद अपने अनेक ग्रंथों की रचना हिंदी में ही की जिनमें सत्यार्थ-प्रकाश विशेष रूप से उल्लेखनीय है।3 इसका प्रथम संस्करण 1865ई. में तथा द्वितीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण (1883ई0) में प्रकाशित हुआ "यह ग्रन्थ चैदह सम्मुलासों (अध्याय) में विभक्त हैं, जिसमें वैदिक धर्म की व्याख्या के अनन्तर विभिन्न वेद-विरोधी धर्म सम्प्रदायों का खण्डन किया गया है।*

----------X----------

परिचय:

इसकी शैली का एक नमूना द्रष्टव्य है-ये सब बातें पोप लीला के गपोड़े ही है जो अन्यत्र के जीव वहाँ जाते है उनका धर्मराज चित्रगुप्त आदि न्याय करते है तो वे यमलोक के जीव पाप करे तो दूसरा यमलोक मानना चाहिए कि वहां के न्यायधीश उनका न्याय करें और पर्वत के समान उन यमगणों के शरीर होने के वावजूद दिखाई क्यों नहीं देते।4 यह उनकी तर्कपूर्ण शैली का नमूना है। कहीं-कहीं उनकी शैली व्यग्यांत्मक भी हो जाती है, "यथा-पहाड़ के बड़े-बड़े अवयच गरूड़ पुराण को बाँचने-सुनने वालों आँगन में गिर पडेंगे तो वे दब मरेंगे या घर का द्वार अथवा सड़क रूक जाएगी तो वे कैसे निकल और चल सकेंगे।4 यद्यपि स्वामी जी के अन्य भाषी होने के कारण उनकी शैली में कहीं-कहीं प्रयोग शुद्धता का अभाव है, पर उनकी वैचारिक शक्ति के कारण उनकी शैली पर्याप्त सशक्त हो गई है।

आगे चलकर आर्य-समाज ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, शास्त्रार्थों, प्रवचनों, उपदेशें, जीवन-चरित्रों, निबन्धों, अनुवाद-ग्रन्थों, पाठय-पुस्तकों एवं उपन्यासों आदि के रूप में इतना साहित्य प्रस्तुत किया कि उसका पूरा विवरण दे पाना इस शोध-प्रपत्र में सम्भव नहीं। इसका थोड़ा विवरण डॉ. लक्ष्मी नारायण गुप्त ने अपने शोध प्रबन्ध- "हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्य समाज की देन (1961ई0) में प्रस्तुत किया है।5 यहाँ उसके आधार पर इनके महत्वपूर्ण गद्य साहित्य एवं उनके रचयिताओं की सूची मात्र प्रस्तुत की जाती है जो हिंदी में वैश्विक प्रचार-प्रसार में आर्य समाज में योगदान को बताती है।

(अ) जीवन चरित-'दयानंद-दिग्विजय' (गोपाल शर्मा, रचना काल(1881ई0) 'दयानन्द' की दिनचर्या' (गोपाल शर्मा, 1884 ई0), 'स्वामी दयानंद सरस्वती का जीवन चरित, '(जगन्नाथ, 1882 ई,)'आर्य धर्मेन्दु जीवन' (रामविलास शारदा), (904 ई0) 'स्वामी दयानंद (चिम्मनलाल वैश्य, 1907 ई0), 'दयानंद प्रकाश', (स्वामी सत्यानंद -1916ई0), 'दयानंद चरित' (देवेन्द्रनाथ, 1931ई0)। स्वामी दयानंद के अतिरिक्त स्वामी श्रद्धानंद, नारायण स्वामी आदि ने अपनी आत्मकथाएँ लिखीं तथा महात्मा हँसराज, स्वामी बिरजानंद आदि के चरित भी विभिन्न लेखको द्वारा लिखे गए। वस्तुतः

www.ignited.in

जीवन चरित सम्बन्धी और भी अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ आर्य समाजियों द्वारा प्रस्तुत किए गए।

(आ) धार्मिक एवं शास्त्रीय साहित्य- आर्य समाज के विभिन्न विद्वान लेखकों ने वेदों, उपनिषदों तथा विभिनन शास्त्रीय सिद्धांतों को हिंदी में प्रस्तुत किया। इन लेखकों में पं0 तुलसीराम, राजाराम, शिवशंकर शर्मा, आर्य मुनि, इन्द्रदेवालंकार श्रमकरण, प्रियरत्न, देवशर्मा, प्रियव्रत, नारायण स्वामी धर्मदेव, ब्रह्मनंद, वेदानन्द, बह्मदत्त, जिज्ञासु भगवद्दत, सतवलेकर, रघुनंदन शर्मा, गंगाप्रसाद उपाध्याय, विश्वनाथ विद्यालंकार, रामनाथ, चन्द्रमणि प्रभृति नाम उल्लेखनीय है।

आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विषयों पर लिखित मौखिक ग्रंथों में नारायण स्वामी के 'आत्मदर्शन' (1921ई0), 'मृत्यु और कर्मलोक, 'कर्म रहस्य' आदि ग्रन्थ, नित्यनांद एवं विश्वेश्वरानंद' द्वारा प्रणीत पुरूषार्थ-प्रकाश (1923ई0), लाल दीवानचंद के 'स्वाध्याय-संग्रह' (1936ई0) 'जीवन-ज्योति' (1936ई0), 'नीति-विवेचन', 'जीवन-तत्व' आदि, मुंशीराम शर्मा ने आर्य धर्म' (1937 ई0) 'प्रथम झा' (1953ई0) आदि उल्लेखनीय है।

(इ) ऐतिहासिक ग्रंथ- आर्य समाज के इतिहास पर पं0 नरेन्द्रदेव, इंद्र विद्यावाचस्पश हरिचन्द्र विद्यालंकार आदि ने महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखें है। भातर के राज नैतिक एवं संस्कृतिक इतिहास के क्षेत्र में जयशंकर विद्यालंकार, हरिदत्त विद्यालंकार, सत्यकेतु विद्यालंकार आदि ने महत्वूपर्ण ग्रंथों की रचना की।

(ई) साहित्यिक ग्रंथ- इस क्षेत्र के प्रारम्भिक लेखकों में पं0 रूद्रदत्त, चांदकरण शारदा, इन्द्र वाचस्पति, सुदर्शन, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार प्रभृति का नाम विशेष रूप् से उल्लेखनीय है। पं0 रूद्रदेव ने 'स्वर्ग में संबजेक्ट कमेटी', 'स्वर्ग में महासभा, पाखण्ड मूर्ति (1822 ई0), 'कण्डी जनेउ का विवाह' (1906ई0) आदि। प्रहसनों की रचना रोचक शैली ने की है। अन्य साहित्यकारों ने भी निबन्ध एवं कथा साहित्य के क्षेत्रा में योग प्रदान किया है।

(उ) पत्र-पत्रिकाएँ-आर्य समाज की प्ररेणा से प्रकाशित होने वाली निम्नलिखित पत्र-पत्रिकाएँ हैः- 'वेद-प्रकाश (कानपुर-1884ई0) आर्य-पत्र (बरेली-1885ई0), 'आर्य समाचार' (1885 ई0), 'आर्य विनय' (मुरादाबाद1885 ई0), 'आर्य सिद्धांत' (प्रयाग 1886 ई0), 'आर्यावर्त' (कलकता-1886 ई0), 'भारत-भगिनी', (प्रयाग 1888 ई0), 'राजस्थान समाचार' (अजमेर-1886 ई0), 'परोपकारी अगारा' (1896 ई0), 'तिमिर नाशक' (1890 ई0), 'ब्रह्मवर्त' (18 90ई0), 'आर्य मित्रा' (1896 ई0), 'पांचाल-पण्डित' (1896 ई0),'सिद्धर्म-प्रचारक' (1899 ई0), 'आर्य-सेवक' (1990 ई0), दयानंद पत्रिका' (1906 ई0), 'भारतोदय; (1909 ई0), 'उषा' (1909 ई0), 'नवजीवन' (1910 ई0), 'भारती' (1920 ई0), 'वैदिक संदेश' (1921 ई0), 'अर्जुन' (1923 ई0), 'आर्य-मार्तण्ड' (1923 ई0), 'आर्य-जगत' (1924 ई0), 'हिन्दी मिलाप' (1928 ई0), 'गुरूकुल-पत्रिका' (1948 ई0), 'जागृति' (1940 ई0), 'वेदवाणी' (1949 ई0), 'वेदपथ' (1949 ई0), 'आर्य शक्ति' (1923 ई0), 'वीर प्रताप इत्यादि।

निष्कर्ष:

इस प्रकार यहाँ आर्य समाज के हिंदी के विकास में मात्र संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की है। इसके अतिरिक्त अनेक महत्त्वपूर्ण प्रयास सम्भवत इंगित नहीं किए गए। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि हिन्दी भाषा को वैश्विक भाषा बनाने और उसे गति देने में आर्य समाज का कितना उत्कृष्ट कार्य है? हिंदी गद्य को आर्य-समाज के आन्दोलनों ने एक अति महत्त्वपूर्ण विषय आधुनिक काल में बनाया। आगे चलकर हमारे साहित्य में जो लहर आई उसे उत्पन्न करने में भी आर्य समाज का गहरा योगदान है। स्वामी दयानंद सरस्वती और उसके अनुयापियों द्वारा महापुरूषों के जीवन चरित, धार्मिक एवं शास्त्रीय साहित्य, ऐतिहासिक साहित्य, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयक रचनाएँ एवं पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से आर्य-समाजियों ने हिन्दी भाषा के गौरव को चार चाँद लगाते हुए उसका गर्व बढ़ाया।

सन्दर्भ-सूची

क्र. संख्या-लेखक-ग्रन्थ (रचना)

1. 'गणपतिचन्द्र गुप्त'-'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास"

2. 'डॉ. रामचन्द्र शुक्ल'-'हिन्दी साहित्य का इतिहास"

3. 'गणपतिचन्द्र गुप्त,-'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास"

www.ignited.in

4. 'स्वामी दयानंद'-'सत्यार्थ-प्रकाश'

5. 'डॉ. लक्ष्मी नारायण गुप्त'-''हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्य समाज की देन"

Corresponding Author

Bajinder Singh*

Assistant Professor, Department of Hindi, Rajiv Gandhi Mahavidayala, Uchana, Jind